दीपावली का उत्सव

शुभ दीपावली

***

त्योहार के प्रथम दिवस यानी 'गोवत्स द्वादशी' के दिन गायों और उनके बछड़ों की पूजा की जाती है, जो दैवीय पवित्रता, अच्छाई, उर्वरता और भरण-पोषण का प्रतीक हैं।

***

दूसरे दिन यानी 'धनतेरस' को परिवार के सदस्य देवी लक्ष्मी की और धन के देवता, कुबेर की पूजा कर प्रचुरता का आवाहन करते हैं।

***

तीसरा दिन यानी 'नरक चतुर्दशी' का पर्व दैत्य नरकासुर पर भगवान श्रीकृष्ण की विजय के रूप में मनाया जाता है।

***

चौथा दिन है 'दीपावली' का। इस दिन भगवान श्रीराम के विजयी होकर अपने राज्य अयोध्या में पुनः आगमन का महोत्सव मनाया जाता है। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने हर उस मार्ग को मिट्टी के बने दियों की पंक्तियों से सजा दिया था जहाँ-जहाँ से होकर भगवान श्रीराम गुज़रने वाले थे, ताकि उनका पथ प्रकाश से आलोकित हो उठे।

***

त्योहार का अन्तिम दिन 'बलिप्रतिपदा' या 'नववर्ष' होता है, जो भगवान श्रीविष्णु के प्रति राजा बलि के निःस्वार्थ आत्मसमर्पण के सम्मान में मनाया जाता है। रिश्तों में नवीनता लाकर और उपहारों व मिठाइयों का आदान-प्रदान कर नववर्ष मनाया जाता है।

***

शुभ दीपावली

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।